# आत्मचिंतन करो ना ?

तुम्हारे दंभ को आज क्या हुआ, कहो ना?
किसने तुमको भयभीत किया है, बोलो ना?

कल तक तो राजा बनें फिर रहे थे सड़क पर,
भर रहे थे ऊँची उड़ान, स्वयं को भूपति मान कर,

तुम्हारी शक्ति तो आज क्या हुआ, कहो ना?
किसने तुम्हें आज आइना दिखाया, बोलो ना?

घूमते थे नग्न,निर्लज्जता की सीमाएँ पार कर,
कर रहे थे प्रकृति का विनाश आँखे मूँद कर,

तुम्हारी अकड़ को किसने ललकारा, कहो ना?
आँखों का पर्दा तुम्हारा किसने गिराया, कहो ना?

गंद मचाइ तुमने समाज को ऊँच-नींच में बाँट कर,
बुन रहे थे पाश झूट का, शाश्वत सत्य को त्यागकर,

तुम्हारी गद्दी आज कौन हिला रहा है, कहो ना?
छुपकर कौन तुम पर वार कर रहा है, बोलो ना?

अंतर्मन में झाँक कर कुछ तो करो ना,
आज समय है, नज़रंदाज़ तुम करो ना।

समीर खांडेकर
25 मार्च, 2020
गुडी पाडवा
चैत्र नवरात्रि